रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –14 ● कानपुर 16 से 31 जुलाई 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

चर्चा हेतु सरकार द्वारा न बुलाये जाने पर ही इहमाई करेगी पहल

पूरे देश का इलेक्ट्रो होम्योपैथ यह चाहता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का शीर्घ विनियमितीकरण हो जिससे कि मान्यता का मार्ग प्रशस्त हो सके, इस इच्छा को पूरा करने के लिए वर्षों से आन्दोलन चलाया जा रहा है, तमाम उतार चढ़ाव के बाद अब कहीं जाकर वह अवसर आया है जब लगता है कि अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी एक मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धति की श्रेणी में आकर खड़ी होगी। यह अवसर अनायास या अचानक नहीं मिला है इसके पीछे पूरे देश के लाखो इलेक्ट्रो होम्योपैथों की भावनायें जुड़ी हैं मात्र भवनायें ही नहीं बरसों के संघर्ष का परिणाम है जिस धैर्य और संयम के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन चलाया गया वह अपने आप में एक मिसाल है।

आज़ादी के बाद आज तक इन 70 वर्षों में ऐसा कोई वर्ष नहीं गुज़रा होगा जब इलेक्ट्रो होम्योपैथ आन्दोलन से विरत हुआ हो, इतना लम्बा समय और इतना संयम यह बिरले आन्दोलन में ही दिखायी पड़ता है, वर्ष 2004 में ऐसा लगा था कि शायद इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह आन्दोलन थम जायेगा लेकिन उस वक्त भी जो जोश हमारे साथियों ने दिखाया यद्यपि उस दौर में हमारे कुछ साथी निराश और हताश होकर हमसे विलग हो गये परन्तु ज्यों ज्यों समय बीतता गया और वास्तविकता उनके सामने आने लगी तो हमारे यही साथी हमसे छिटक कर दूर चले गये थे, वह पहले से ज़्यादा विश्वास के साथ इस पद्धति से जुड़ गये हैं उस समय जिस दूरदर्शिता के साथ इस लड़ाई को लड़ा गया उसके परिणामोस्वरूप न केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पुनर्जीवन मिला अपितु वह अधिकार भी प्राप्त हुए जिसके लिए हम सब वर्षों से संघर्षरत रहे हैं। 5–5–2010 का वह आदेश यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दशा बनाता है तो 21 जून, 2011 को भारत सरकार द्वारा जारी आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा तय करता है। 21 जून, 2011 के इस आदेश ने ही पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिए एक नई व्यवस्था दी इसी क्रम में बढ़ते हुए सरकार को विवश होना पड़ा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपेक्षा को खत्म करे और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सुदृढ व्यवस्था निर्मित करे इसी सुदृढ व्यवस्था के लिए 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने एक नोटिस जारी कर यह प्रकट कर दिया कि सरकार इलेक्ट्रोहोम्योपैथी के विनियमितीकरण के लिए तत्पर है।

जैसी की शासकीय व्यवस्था होती है कि कोई भी आदेश निर्गत करने से पहले और अधिकार देने से पूर्व सरकार हर बात की सूक्ष्म जांच कर लेती है इसीलिए 28फरवरी, 2017 की नोटिस में भारत सरकार ने 8 बिन्दुओं के माध्यम से पूरे भारत के इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्था संचालकों से जानकारी मांगी, इसके लिए सरकार द्वारा तीन तीन महीने का चार बार अवसर दिया गया। 31 दिसम्बर इसकी अन्तिम तिथि है, सरकार द्वारा दी गयी समय सीमा के 2 खण्ड समाप्त हो चुके हैं पहला खण्ड 30 मार्च व दूसरा खण्ड 30 जून को समाप्त हो चुका है अब सितम्बर और दिसम्बर के दो खण्ड शेष हैं। मार्च के खण्ड में 7 लोगों ने भारत सरकार के समक्ष प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सरकार द्वारा मांगी वांछित जानकारी प्रेषित की इसे संयोग ही कहा जायेगा कि भारत सरकार ने इन 7 के 7 प्रतिवेदनों पर बिना विचार किये हुए अस्वीकार कर दिया।

13 जून 2017 को एक पत्र जारी कर इन लोगों को एक अवसर प्रदान किया यद्यपि पूरे देश में बहुत सारे संगठन हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य कर रहे हैं इनमे से कितने संगठन भारत सरकार के पास प्रतिवेदन भेजेंगे इसका कोई आंकलन नहीं है, चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया भारत की एक मात्र ऐसी संस्था है जिसके पक्ष में भारत सरकार ने 21 जून, 2011 को आदेश जारी किया है यह आदेश जारी होने के बाद से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया एक नीति नियामक संस्था के रूप में कार्य कर रही है और इस संगठन का यह प्रयास रहता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की भलाई के लिए जो भी कार्य हों वह किये जायें।

- सरकार से आमंत्रण आने की उम्मीद
- हो रही है प्रतीक्षा
- इहमाई एक मात्र नियामक संस्था
- इहमाई भी कर सकती है पहल
- प्रतिबद्धता नहीं बदली
- अधिकार लेने का संकल्प

उत्तर प्रदेश में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ही अभी तक ऐसी संस्था है जिसके लिए 4 जनवरी, 2012 को प्रदेश सरकार द्वारा शासनादेश जारी किया गया है।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 का संचालन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया की नीतियों के अनुरूप होता है क्योंकि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया ही एक मात्र सरकारी आदेश प्राप्त संगठन है इसलिए पूरे देश की निगाहें इस संगठन पर हैं कि यह संगठन क्या कार्यवाही करता है ? 13 जून 2017 से बनी परिस्थितियों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया पैनी दृष्टि रखे हुए है और उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रही है प्रथम तो संगठन को अपेक्षा है कि भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया को चर्चा के लिए आमंत्रित करेगी यह अवसर भी सरकार द्वारा दिया जायेगा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितीकरण के लिए अपना पक्ष रखेगी, संगठन यह अपेक्षा इसलिए भी कर रहा है क्योंकि तमाम निरीक्षणों और परीक्षणों के बाद ही भारत सरकार ने इस तरह का आदेश इस संगठन के लिए पारित किया यह संगठन भी अपने दायित्वों से विमुख नहीं है और लगातार प्रयास कर रहा है कि पूरे देश में एक ऐसा वातावरण बने जिससे कि एक सर्वसम्मति का वातावरण पैदा हो, जो प्रश्न भारत सरकार ने किये हैं उनका जवाब सर्वसम्मति से ही दिया जाये जहां तक वांछित सूचनाओं का प्रश्न है उसमें से सभी जानकारियां पहले से ही भारत सरकार के पास उपलब्ध हैं परन्तु जब सरकार ने ऐसे बिन्दुओं पर जानकारी चाही है जिनकी जानकारी उनके पास है तब यह हमारा दायित्व है कि हम एक एक बिन्दु का सटीक उत्तर दें जिससे कि सरकार संतुष्ट हो और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विनियमितीकरण की कार्यवाही प्रारम्भ करे। कुछ लोगों की वैज्ञानिक और एक्सपर्ट शब्द पर अपनी अपनी राय है इहमाई द्वारा इस विषय पर विभिन्न संगठनों से चर्चा कर उन्हें यह बताने का प्रयास किया जायेगा कि एक्सपर्ट का आशय विषय विशेषज्ञ से है अर्थात जो लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से प्रैक्टिस कर रहे हैं वही लोग इस विधा के एक्सपर्ट हैं। हमें आशा है कि यह कोई ऐसा विषय नहीं है जिसमें विरोध जैसी कोई बात बनती हो, इसपर आम सहमति बनानी ही होगी। सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वैज्ञानिकता को पहले ही स्वीकार कर चुकी है वह अच्छी तरह जानती है कि अगर यह चिकित्सा पद्धति अवैज्ञानिक होती तो लगभग 150 वर्षों से बिना किसी हानि के जन स्वास्थ्य में सहयोग कैसे कर रही है ?

यही एक मात्र मज़बूत कारण है जिसके कारण 13 जून, 2017 को जारी पत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वैज्ञानिकता पर कोई जानकारी नहीं चाही है, हमारे जो वैज्ञानिक हैं जब अवसर आयेगा तब अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार वैज्ञानिकता सिद्ध करेंगे अभी तो केवल यह काम है कि हम सब मिलकर भारत सरकार के समक्ष एक ऐसा मॉडल प्रतिवेदन प्रस्तुत करें जिसपर सरकार शीघ्र कार्यवाही प्रारम्भ कर दे और हम सबकी अपेक्षायें पूरी हों, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया अगस्त तक अपने सभी साथियों से आम सहमति बनाने का प्रयास करेगी यदि आम सहमति न बन पायी तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया प्रतिवेदन देने की पहल करेगी। सबका साथ सबका विकास की प्रतिबद्धता पर हम आज भी अडिग हैं। न कोई आगे और न कोई पीछे इलेक्ट्रो होम्योपैथी का लाभ सबको मिले लोगों की बरसों की प्रतीक्षा समाप्त हो और इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी अपने अभीष्ट को प्राप्त करे।

यही हमारा संकल्प है ।

बदलती परिस्थितियाँ

ज्यों–ज्यों 31 दिसम्बर, 2017 का दिन नज़दीक आता जा रहा है त्यों–त्यों इलेक्ट्रो होम्योपैथी की परिस्थितियां बदलती जा रही हैं यह परिस्थितियां क्यों बदल रही हैं और इनके बदलने का कारण क्या है इस पर हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ को सोचना होगा !

परिस्थितियां अभी तक तो सामान्य चल रही हैं परन्तु जिस ढंग से हमारे साथी काम कर रहे हैं वह कोई बहुत अच्छी दिशा की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं, दिशा पाकर भी दिशा हीन होना किसी भी तरह से समझदारी की श्रेणी में नहीं आता।

आज से 4 महीने पहले तक स्थिति सामान्य थी 28 फरवरी, 2017 को मान्यता सम्बन्धी तमाम प्रपत्रों व उलटी–सीधी आर0 टी0 आई0 के कारण भारत सरकार को एक नोटिफिकेशन जारी करना पड़ा, वैसे तो यह नोटिस इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक ठण्डी हवा के झोंके की तरह आयी थी और यह नोटिस इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा और दशा दोनों को संभालने के लिए ही भारत सरकार द्वारा जारी की गयी थी।

नोटिस के जारी होते ही हमारे वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथी जो अपने आप को चर्चा में रखने के लिए आन्दोलन का सहारा ले रहे थे उन्होंने अपनी पीठ थपथपाई और यह कहने में नहीं चूके कि यह उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है, प्रयास जिसने भी किये हों ! परिणाम तो आया, लोगों ने नोटिस तो पढ़ा और अपने अपने ढंग से उसका भाव निकाला और लग गये काम पर। पूरे देश में इस नोटिस को लेकर इतना शोर मचाया गया कि बहुत लोग तो समझे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शायद मान्यता मिल गयी ! परन्तु जब सच्चाई सामने आयी तो वातावरण बदला हुआ था, कोई कुछ भी कहे परन्तु यह सत्य है कि भारत सरकार ने इस नोटिस के माध्यम से यह दर्शा दिया है कि भारत सरकार चाहती है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला हो जाये। यह सत्य है कि भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में बहुत कुछ जानती है परन्तु कुछ विषय ऐसे भी होते हैं जिसपर संचालकों की दृष्टि भी स्पष्ट होनी चाहिये।

इस नोटिस के माध्यम से भारत सरकार ने कुछ ऐसी जानकारियां चाही थीं जो किसी भी चिकित्सा पद्धति की स्थापना के लिए आवश्यक होती हैं और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जो कर्ता धर्ता हैं उनका भी यह दायित्व है कि वांछित जानकारियां सरकार को उपलब्ध करायें, इसे हम विडम्बना ही कहेंगे कि सरकार ने 28 फरवरी, 2017 को जारी पत्र के माध्यम से जो सूचनायें मांगी हैं वह सामान्यतयः हर संस्था संचालक के पास उपलब्ध हैं परन्तु हमारे साथी या तो विषय को गम्भीरता से ले नहीं रहे हैं या फिर विषय की गम्भीरता को समझ नहीं पा रहे हैं, दोनो ही परिस्थितियों में उनके द्वारा उठाया गया कोई कदम इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला नहीं कर सकता, कुछ को आगे बढ़कर पहल करने की आदत है, जिससे कि कोई उनसे आगे न हो जाये, ऐसे लोग एक दो नहीं, लगता है इनका एक समूह है तभी तो मार्च के महीने में 7–7 लोगों ने सरकार को सूचनायें उपलब्ध करायीं परन्तु सरकार का रूख तो देखिये उसने किसी भी प्रतिवेदन पर गौर नहीं किया और उनको एक तरह से अस्वीकार कर दिया।

जिन जिन के प्रतिवेदन अस्वीकार हुए हैं यद्यपि उनको एक अवसर और दिया गया है परन्तु अब इन प्रतिवेदनों पर सरकार कितनी गम्भीर होगी ?यह तो आने वाला समय ही बतायेगा प्रतिवेदनों का अस्वीकार होना उतनी बड़ी बात नहीं है जितना कष्ट दायक यह है कि प्रेषित प्रतिवेदनों पर दृष्टि डालने के बाद सरकार ने यह आंकलन कर लिया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संस्था संचालक कितने बुद्धिमान हैं ! तभी तो जून 2017 में सरकार ने पुनः एक पत्र जारी किया जिसमें बिन्दु वार स्पष्ट रूप से कहा कि सरकार को मात्र इन्हीं बिन्दुओं पर जानकारी अपेक्षित है।

इसके साथ–साथ सरकार ने मीठी चुटकी भी ली है कि उसे सिर्फ आवश्यक जानकारियां ही चाहिये जानकारियों का पुलिन्दा नहीं ! इतना होने के उपरान्त भी, अभी भी हमारे साथी बदलने को तैयार नहीं हैं और उनकी यह कार्यप्रणाली निश्चित रूप से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कभी भी परेशानी में डाल सकती है इसलिए हमारे सारे साथियों को बार बार चिकित्सा पद्धति के हित के बारे में सोचना चाहिये और उसी के अनुरूप कार्य करना चाहिये।

परिस्थितियां बनती और बिगड़ती हैं परन्तु परिस्थितियों को अपने अनुरूप ढालने की कला मनुष्य के अन्दर होती है इसलिए परिस्थितियों को अपने अनुरूप ढालने का प्रयास करें।

धीरे–धीरे भंग हो रहा है मोह

चकाचौंध से हर व्यक्ति प्रभावित होता है यह मनुष्य की प्रकृति होती है ! चकाचौंध से मनुष्य प्रभावित न हो वह सामान्य मनुष्य से इतर श्रेणी में आता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी चकाचौंध थी, उसी चकाचौंध में पड़ कर बहुत सारे लोग इससे जुड़ते गये परन्तु जब उनकी अपेक्षायें पूर्ण नहीं हुई तो धीरे धीरे वह इस चिकित्सा पद्धति में कमियां निकालने लगे, सन् 1990 से लेकर 2000 तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी का स्वर्णिम काल जिसने देखा और भोगा है वह इससे अलग नहीं हो सकता, 2003 से 2010 तक का अज्ञातवास, 2010 में प्राप्त संजीवनी और 2011 में जो सफलता का स्वाद चखा गया उससे जो लोग अज्ञातवास में चले गये थे वह एकाएक बाहर आ गये और अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में कूद पड़े, क्योंकि 2003 की तुलना में 2011 में काम करने की स्थितियां बदल चुकी थी अधिकार कुछ लोगों तक सीमित हो चुके थे और जो लोग कल तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भाग्यविधाता हुआ करते थे आज वे अपने भाग्य के निर्माण के लिए ज़मीन तलाशते नज़र आते थे।

क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर नियमों का अंकुश हो गया था कार्य करने के लिए अधिकारिता की आवश्यकता हो गयी थी और अधिकारिता पाने के लिए पात्रता सिद्ध करनी पड़ी है, जो लोग अधिकारपूर्वक काम नहीं कर पा रहे थे उनके मन में कहीं न कहीं एक टीस थी और इस टीस के कारण वह चैन से बैठ नहीं पा रहे थे, कुछ लोग जो काम कर रहे थे उनको भी उतना मज़ा नहीं आ रहा था जितना की पहले आया करता था।

क्योंकि बदली हुई परिस्थितियों में सामंजस्य बैठालना हर एक के बस की बात नहीं थी अस्तु अपने आप को क्रियाशील दिखाने व इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सबसे बड़ा कार्यकर्ता सिद्ध करने के लिए आन्दोलनों का सहारा लिया गया। आन्दोलन को वर्षों से चलाया जा रहा है लेकिन वर्ष 2011 के बाद आन्दोलन के स्वरूप में मूलभूत परिवर्तन हो गया है पहले जो लोग आन्दोलन चलाते थे अब वह शालीनता दिखायी नहीं देती है जैसे कि पिछले कुछ वर्षों से राजनीति में यह चलन चल पड़ा है कि दूसरों को अपशब्द कहो जितना सम्भव हो उतने आरोप लगाओ उनके द्वारा किये गये हर प्रयासों को गलत बताओ और वाहवायी लूटो राजनीति का यह चलन हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी नेताओं को खूब भाया और उन्होंने इसे पूरी तरह से अपनाया भी। जहां भी गये वहां एक ही बात कही कि जो आपके पूर्ववर्ती नेतृत्वकर्ता थे उन्होंने आपको खूब छला है, ठगा भी है, अनाप–शनाप आरोप लगाये और तो और यह कहने से भी नही चुके कि जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी आपको पढ़ाई गयी है वह गलत है असली इलेक्ट्रो होम्योपैथी हम बतायेंगे। जब कुछ नहीं मिला तो मैटी के निधन पर ही राजनीति की गयी इस तरह से तरह–तरह के हथकण्डे अपना कर सीधे–साधे इलेक्ट्रो होम्योपैथों को खूब छला गया, जो कुछ चतुर प्रकार के नेता थे उन्होंने पुराने साथियों को मंच में बैठाला, उनका स्वागत किया, उनके सम्मान में मीठी मीठी बातें कहीं फिर उन्हीं के सामने उन्हीं की छीछालेदर की गयी। इस तरह से पुराने लोगों को धूर्त, मक्कार व मूर्ख बताकर स्वयं को नायक के रूप में स्थापित करने का प्रया किया, प्रयास काफी हद तक सफल भी रहे परन्तु कागज़ की नाव डूबती ही है, परिस्थितियों ने बदलना जारी रखा और एक परिस्थिति आ गयी जब सच्चाई से ही पार पाया जा सकता था, झूठ और खोखले आश्वासनों से कब तक संतावना दी जा सकती है ! हमारे ही नये साथियों ने कई बार समयबद्ध वादे भी किये परन्तु जब समय पार हो गया और कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो हमारे ये नेतृत्वकर्ता प्रश्नों के दायरे में घिर गये अब लोगों के सवालों का जवाब नहीं दे पा रहे हैं जिससे इनकी विश्वसनीयता कम होती जा रही है और यह नेतृत्वकर्ता अब यह समझ चुके हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कल्याण इनके बस की बात नहीं है इसलिए अब इनकी सक्रियता कम होने लगी है, इनकी सक्रियता कम हो या ज़्यादा हो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जो आन्दोलन आगे बढ़ चुका है वह पीछे नहीं आ सकता और पीछे आये भी तो क्यों ? इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन तथ्यपरक है और बहुत दिनों तक कोई भी तथ्य से मुहँ नहीं मोड़ सकता है।

भारत सरकार सतत प्रयास कर रही है कि देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों का भला हो और देश की जनता को इस चिकित्सा पद्धति के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सके।

मोह का होना और मोह का भंग होना उनके लिए है जो स्वार्थ सिद्धी के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हैं कुछ दिनों से देखने में आया है कि कल तक जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए मरने जीने की बात करते थे आज वे अन्य पद्धतियों में लग गये हैं कुछ लोग सामाजिक हो गये और कुछ लोग सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपने आप को स्थापित करने में लग गये हैं।

हमारे एक साथी जिनकी गर्जना से सभामण्डप गूंज जाते थे उनका इस कदर मोह भंग हुआ है कि उन्होंने अपने आप को राजनीतिज्ञ कहलाना शुरू कर दिया है। यह परिवर्तन इस बात का संकेत दे रहा है कि हमारे जो साथी कुछ पाने की आस में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलनों से जुड़े थे वह इस कदर हताश हो चुके हैं कि वह राह बदलने का मन बना चुके हैं परन्तु उनकी विवशता यह है कि पिछले 5 वर्षों में उन्होंने इतने वादे कर रखे हैं जिसके कारण आसानी से विलग नहीं हो पा रहे हैं या यह कहें कि यह अब सारे के सारे नेतागण छद्म नेतागिरी कर रहे हैं।

कृत्रिम और छद्म स्वरूप कभी स्थायी नहीं होता जब आवरण उतरता है तब स्थिति भयावह होती है, आज जिन परिस्थितियों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन गुज़र रहा है वह एक दीर्घकालीन नीति निर्माण की मांग कर रहा है और नीति भी ऐसी हो जिसमें सर्वजन हिताय का भाव छिपा हो, यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन अच्छे परिणाम देगा, जो लोग अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी से मोह भंग कर रहे हैं वह अदूरदर्शिता का काम कर रहे हैं परिस्थितियां बता रही हैं कि आने वाला समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी का है इसलिए अब किसी भी तरह की बहानेबाजी की आवश्यकता नहीं है।

सरकार का सकारात्मक रूख इस बात को स्पष्ट कर रहा है कि 31 दिसम्बर, 2017 तक भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में कोई न कोई सार्थक निर्णय अवश्य लिया जायेगा लेकिन मात्र कामना से काम नहीं चलता इसके लिए प्रयास करने होते हैं और वर्तमान में जो प्रयास किये जा रहे हैं उन प्रयासों में गुणात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है।

यदि हम सब गुणात्मक परिवर्तन कर पाये तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अच्छे भविष्य निर्माण के हम सब साक्षी होंगे।

पैथी हित में अबतो ठहर जाइये

कहा जाता है कि
" जीवन चलने का नाम
चलते रहो सुबह शाम "
परन्तु कभी कभी आगे बढ़ने के लिए कुछ पल रूकना भी पड़ता है और यह रूकावट अक्सर अप्रत्याशित परिणाम भी दे जाती है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी का दर्शन रूकने और चलने दोनों का है, हम बहुत दूर तक चलकर आगे आ चुके हैं, बस कुछ ही कदम बकाया हैं जब हम सबको मंज़िल मिल जायेगी, मंज़िल पाने में कोई रूकावट नहीं है सिर्फ अपनी अपनी दृष्टि है। यदि हम आज के दृश्य पर नज़र डालें तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भविष्य कहीं से भी धूमिल नज़र नहीं आता है परन्तु जिस तरह की परिस्थितियां बनायी जा रही हैं इसके कारण भविष्य में जिस तरह की परिस्थितियों के निर्माण के संकेत मिलते हैं वह कोई बहुत सुख प्रदान करने वाले नहीं होते हैं। 28 फरवरी, 2017 और 13 जून, 2017 दोनों ही सुखद एहसास दिलाते हैं बशर्ते हम उनपर स्थिर रहें और जो वांछित है उसी पर काम करें। 28 फरवरी के अनुपालन में हमारे साथियों ने जो भी प्रयास किये भले ही वह लक्ष्य भेदने में सफल न हुए हों परन्तु एक नई और स्पष्ट दिशा का निमार्ण तो कर ही गये हैं, 28 फरवरी, 2017 के पत्र में यद्यपि सबकुछ स्पष्ट था परन्तु कुछ लोग सम्भवतः सरकार के उस आशय को समझ नहीं पाये या फिर यह भी सम्भव हो सकता है कि आगे दिखने की होड़ में जो कुछ भी किया वह एक जल्दबाज़ी भरा कदम है और उसी का परिणाम है कि सरकार ने उन्हें पुनः अवसर प्रदान किया अब हमारे यह साथी इस अवसर का कितना लाभ उठा पाते हैं ! यह तो बिल्कुल उसी तरह है जैसे क्रिकेट के खेल में कोई खिलाड़ी संदेह का लाभ पाकर अगली गेंद खेलने का अवसर पाता है और यदि खिलाड़ी फिर भी नहीं संभला तो खेल से बाहर होने में तनिक भी देर नहीं होती है। कोई भी व्यक्ति यह नहीं चाहता है कि वह प्रतिस्पर्धा से बाहर हो प्रतिस्पर्धा में बने रहने क लिए केवल जानकार होना ही आवश्यक नहीं होता है अपितु जिस प्रतिस्पर्धा में आप हैं उस विषय का विशेषज्ञ भी होना पड़ता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी लोग लगे हैं सभी योग्य हैं, किसी की भी योग्यता पर संदेह नहीं किया जा सकता है, फिर भी कभी जल्दबाज़ी में कुछ कमियां रह जाती हैं यदि इन कमियों को समय रहते सुधार लिया जाये तो यही कमियां लाभकारी हो जाती हैं यही 28 फरवरी के बाद हुआ जिन लोगों ने सरकार को विस्तृत जानकारियां प्रेषित कीं सरकार ने अति स्पष्ट करते हुए 13 जून के पत्र में बिन्दुवार स्पष्टता के साथ लिख दिया है कि उसे क्या आवश्यकता है और कितनी आवश्यकता है, इतना सबकुछ होने के उपरान्त भी अभी भी हमारे साथियों की चाल में कोई परिवर्तन नहीं आया है सब अपने अपने हिसाब से इस पत्र का भाव निकाल रहे हैं और कार्य कर रहे हैं इसी बीच इन पत्रों में जो चीज़ जानकारी के लिए मांगी ही नहीं गयी उसपर विशेष चर्चा हो रही है, वह है इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वैज्ञानिकता ! यह सत्य है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति का आधार वैज्ञानिक ही होता है और जब वह चीज़ हर कसौटी पर खरी उतरती है तभी जन स्वीकारिता बनती है काउण्ट सीज़र मैटी ने जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जन्म दिया था उस समय उनके मन और मस्तिष्क में सिर्फ एक ही बात रही होगी कि किसी ऐसी पद्धति का उद्भव किया जाये जो जनसामान्य को रोगमुक्त कर सके तत्कालीन प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की खामियों व प्रतिकूल प्रभावों से आहत होकर ही वह इस कार्य में लगे, जैसा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास बताता है कि व्रणयुक्त कुत्ते का बार बार बगीचे के किनारे पर जाना और फिर उन पादपों पर लेट कर निरन्तर अपने व्रण को उन पौधों के सम्पर्क में आना तदुपरान्त धीरे धीरे व्रण का ठीक होना यही वह घटना थी जिसने मैटी के मसतिष्क पर प्रभाव डाला और उन्हें यह सोचने पर विवश किया कि ऐसे कौन से पदार्थ इन पौधों में हैं जिसके सम्पर्क में आने के बाद श्वान का घाव ठीक हो जाता है निश्चित रूप से यह वैज्ञानिक क्रिया थी, बहुत सम्भव है कि उस समय उस पर उतनी मीमांसा न हुई हो।

समय परिवर्तनशील है 200 वर्ष में बहुत कुछ बदल चुका है जलवायु और वातावरण में बहुत परिवर्तन हो चुके हैं, धरती के ताप में परिवर्तन आ चुका है, बहुत सारे ऐसे परिस्थितिक परिवर्तन हो चुके हैं जिनका हर प्राणी पर प्रभाव पड़ चुका है।

मैटी ने इसी तरह भिन्न भिन्न पौधों पर कार्य किया और उनकी उपादेयता को समझा और इसी उपादेयता के आधार पर उसे एक चिकित्सा पद्धति के रूप में संसार को परिचित कराया, अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वैज्ञानिकता पर सवाल उठाना कहाँ तक उचित होगा?आज जब भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नियमितीकरण करना चाहती है तो इस तरह के प्रश्न बढ़ते हुए कदमों में रूकावट लाते हैं हम यह स्वीकारते हैं कि हमारे यहां योग्य और योग्यतम वैज्ञानिक स्तर के व्यक्ति हैं उनकी योग्यता पर हम सबको नाज़ है परन्तु वर्तमान परिस्थिति यही कहती है कि पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्थापित हो लेने दें फिर जब अवसर मिले वैज्ञानिकता भी सिद्ध होगी वैज्ञानिकता का पहलू कोई नया नहीं है इस शब्द से अन्य पद्धतियों को दो चार होना पड़ा आयुर्वेद, होम्योपैथी और युनानी चिकित्सा पद्धतियों को करारे दंश झेलने पड़े हैं इतनी पुरातन चिकित्सा पद्धति होने के उपरान्त भी कभी कभी आयुर्वेद को अवैज्ञानिक पद्धति होने का आरोप झेलना पड़ता है। पिछले वर्षों में जब योग के विनियमितीकरण के प्रयास शुरू किये गये तो बहुत लोगों ने योग की वैज्ञानिकता पर ही प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिये थे। यह तो सरकार की इच्छाशक्ति थी कि योग आज विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कमियां हो सकती हैं, हो सकता है कि हमारे वैज्ञानिक साथी उसको दूर करने में सक्षम भी हों परन्तु आज की आवश्यकता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को किसी भी तरह से स्थापित कराया जाये और इस कार्य में हर एक का योगदान होना चाहिये चूंकि यह एक सामुहिक कार्य है इससे लाखों लोगों की रोज़ी रोटी के साथ साथ करोड़ों लोगों के जन स्वास्थ्य लाभ की भावना भी जुड़ी है। प्रयास और योगदान कभी छोटा या बड़ा नहीं होता है जो जिस स्तर का होता है वह उस स्तर का योगदान देता है, जो वैज्ञानिक है वह वैज्ञानिक विधा पर योगदान देता है जो साहित्य सृजन करता है वह अपने साहित्य के माध्यम से लोगों को जानकारी देता है और जो चिकित्सा व्यवसाय से जुड़ा है सही माने में सच्चा योगदान वही देता है कारण, यह वही व्यक्ति होता है जो अपनी विधा का वास्तविक प्रचारक और प्रसारक होता है। वैज्ञानिक और साहित्य सृजनकर्ता की अपनी सीमायें हैं जब कि चिकित्सक की भूमिका असीमित होती है एक एक चिकित्सक हज़ारों लोगों से जुड़ता है और यह हज़ारों लोग एक ऐसी श्रंखला का निर्माण करते हैं जो विकास के रास्ते में आगे बढ़ते हुए एक नया इतिहास रचते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन हमारे इन्हीं कर्मयोगियों के कंधे पर आगे बढ़ते हुए निरन्तर प्रगति की राह पर बढ़ रहा है, यह तो समय की बलिहारी है कि समय की सीमा बढ़ती ही जा रही है परन्तु निराशा या हताशा जैसी कोई बात नहीं है, आज हम उस मुकाम पर पहुँच चुके हैं जहां से सिर्फ मंज़िल का रास्ता ही दिखता है और मंज़िल में कोई रूकावट नहीं है इस विचार के साथ हमें सतत प्रयास करने होंगे थोड़ी सी मनोवृत्ति में परिवर्तन भी लाना होगा न कोई आगे है और न कोई पीछे जब सबका लक्ष्य एक है तो कैसी दूरियां अगर कहीं कोई भ्रान्ति या भ्रम है तो आपस में बैठकर सुलाझाने में ही समझदारी है। इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उपलब्धियां ही याद की जाती हैं प्रयास तो सिर्फ प्रेरणा के रूप में काम आते हैं। याद कीजिए जितने भी आन्दोलन आज तक हुए हैं उनको सामुहिकता के आधार पर ही जीते जा सके हैं, आयुर्वेद का आन्दोलन हो या होम्योपैथी के प्रान्तीयकरण का आन्दोलन हर आन्दोलनों में अपने ही लोगों ने साथ दिया है, ऐसा नहीं है कि जब यह आन्दोलन चलाये गये तब सब एक थे मतभिन्नतायें तब भी थीं लोगों की सोच अलग अलग थी लेकिन उद्देश्य एक था और जिनके मन में यह विचार है कि हम आगे निकल जायें तो यह बात फिर याद रखनी चाहिये कि आन्दोलनकारी कितना भी उर्जावान क्यों न हो सम्मान परिणाम का होता है आजीवन परिणाम ही याद किये जाते हैं आन्दोलन कारी सिर्फ अवसरों पर स्मरण कर लिये जाते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन आज विभिन्न संगठनों के बीच बंटा हुआ है और हर संगठन का संचालक यह चाहता है कि सरकार जो भी निर्णय दे वह उसी संगठन को दे, ऐसा होना मुमकिन नहीं दिखता है कारण है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विषय किसी निजी संगठन या व्यक्तिविशेष का नहीं है यह तो सम्भव है कि किसी भी संगठन की अगुवाई में यह लड़ाई लड़ी जा सकती है और सफलता प्राप्त की जा सकती है इसलिए परस्पर प्रतिद्वन्दिता के स्थान पर एक स्वस्थ प्रस्पिर्धा को जन्म दें, इस प्रतिस्पर्धा का ताना बाना ऐसा हो जहां सबकी भावनाओं का सम्मान हो, हर एक की

राय का स्वागत किया जाये, व्यक्तिगत हट से ऊपर उठकर एक ऐसी रणनीति बनायी जाये जो सर्वस्वीकार हो, हर संगठन को उचित स्थान मिले, प्रतिपल नई सम्भावनाओं की तलाश की जाये, यदि ऐसा हो पाता है तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सफलता कभी भी संदग्धि नहीं हो सकती है इसलिए जो कदम आगे बढ़ गये हैं उन्हें पीछे हटाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि एक ऐसी कदमताल बने जिसके स्वर से सरकार भी जाग उठे।

सरकार को जगाने के लिए न तो नारों की जरूरत है और न ही किसी समग्र आन्दोलन की अपितु आवश्यकता है कुछ सकारात्मक विचारों वाले ऐसे व्यक्तियों की जो अपनी विचार धारा से सरकार को प्रभावित कर सकें और जो तथ्यात्मक वास्तविकता उसको यर्थाथ रूप में धरातल पर ला सकें यह कोई कठिन कार्य नहीं है यह सबकुछ हमारे आपके बीच से ही निकलना है।

इसके लिए हमें तेज़ कदमों के स्थान पर दूरदर्शी धीमे कदमों की आवश्यकता है। समय के साथ साथ हर चीज़ बदलती है, आवश्यकतायें बदलती हैं, अनिवार्यतायें बदलती हैं, इन्ही जीवन्त विचारधारा के साथ आम सहमति बनाकर सबकी भावनाओं को सम्मान करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इस आन्दोलन को अन्तिम पड़ाव

भटकाव नहीं ठहराव चाहिये

जब किसी नदी में जल ज़्यादा मात्रा में आ जाता है तब वह नदी अपनी चाल बदल देती है और प्रवाह की यही तेज़ी उसके राह में भटकाव पैदा कर देती है और यह भटकी हुई नदी सीमायें तोड़ती हुई प्रवाहमय होती है और उसके इस प्रवाह में जो भी चपेट में आता है वह नुकसान ही उठाता है।

भटकाव कभी भी अच्छा नहीं होता है यदि व्यक्ति भटक रहा हो तो उसके लिए अच्छा होता है कि कुछ पल के लिए ठहर जाये क्योंकि वह भटकता रहा तो इसी भटकाव की स्थिति में स्वयं का नुकसान तो करता ही है साथ साथ उनको भी प्रभावित करता है जो उनके सम्पर्क में होते हैं भटकाव एक सामान्य सी परिस्थिति है और परिस्थितिजन्य कारणों से ही भटकाव की उत्पत्ति होती है परन्तु जो लोग चैतन्य और चौकन्ने रहते हैं वे ऐसी स्थिति को जन्म लेने ही नहीं देते हैं भटकाव और ठहराव दोनों एक दूसरे के विरोधाभासी हैं परन्तु दोनों में एक समानता है किसी उद्देश्य को पाने के लिए जब व्यक्ति के प्रयासों को सफ़लता नहीं मिलती है तब वह भटकाव की स्थिति में आ जाता है और कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो प्रयासों के परिणामोस्वरूप सफलता न मिलने के उपरान्त भी न तो क्षुब्ध होते हैं और न ही भटकाव की स्थिति में आते हैं वरन स्थिति को नियन्त्रण में रखते हुए ठहराव की मुद्रा में एक नई स्थिति को जन्म देते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति भी आजकल कुछ ऐसी ही है गुज़रे दो तीन वर्षों में कुछ नवोदित लोगों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन की कमान अपने हाथ में ली और पूरी ऊर्जा के साथ इस आन्दोलन में लग गये तमाम प्रयासों के बाद भी जब उन्हें सफलता नहीं मिली तब सफलता न मिलने के कारणों पर अध्ययन करने के स्थान पर भटकाव की स्थिति में आ गये और इसी भटकाव में वह ऐसा करने लगे जो उनके कद के अनुरूप नहीं है। वर्तमान समय सोशल मीडिया का है कुछ लोगों ने सोशल मीडिया को प्रचार का आधार भी मान लिया है इसलिए ऐसे लोग रातोंदिन फेसबुक और वाह्सएप के माध्यम से जनता से अपना जुड़ाव रखना चाहते हैं, अब सोचने की बात यह है कि ऐसा क्या है जो आप रोज़ नया लोगों को बतायेंगे इसी बताने के चक्कर में जो कुछ भी किया जाता है कभी कभी वह हास्यस्पद हो जाता है, पिछले कुछ हफ्तों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ नया दिखाने के चक्कर में पुराना नहीं इतना पुराना दिखाया जा रहा है जो कि अब अर्थहीन हो चुका है।

हमारे साथी आजकल बिल्कुल वैसा ही व्यवहार कर रहे हैं जैसा कि विपक्ष की राजनीति करने वाले राजनीतिज्ञ करते हैं, जबसे लोकसभा और राज्यसभा के कार्यों का सजीव प्रदर्शन होने लगा है तबसे बहुत सारे लोगों ने बहुत कुछ सीख लिया है, कभी कभी जब आप लोकसभा या राज्यसभा की कार्यवाही देखते होंगे तो आप देखते हैं कि विपक्ष का नेता किस तरह से सामने वाले पर तर्कों से प्रहार करता है और इन तर्कों की पुष्टि के लिए कभी कभी इतने पुराने कागज़ को लहरा देता है जो कागज़ अपनी प्रासंगिकता ही खो चुके होते हैं।

आज सोशल मीडिया के माध्यम से इसका खुलेआम प्रयोग हो रहा है यह प्रचलन कितना लाभकारी है यह तो प्रयोग करने वाले ही जानें कुछ उदाहरण अपने आप में इस बात को स्वयं बता रहे हैं कि क्या हो रहा है, पिछले दिनों फेसबुक पर एक चित्र बार बार डाला गया जिसमें देश के कुछ वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथों के चित्र हैं, यह किसी राजनैतिक कार्यकर्ता का कार्यक्रम था अब इस चित्र का वर्तमान परिवेश में क्या औचित्य है ? यह चित्र तो अपनी उपयोगिता तो सिद्ध नहीं कर पा रहा है बल्कि लोगों के मन में एक नये भ्रम को जन्म देता है, कुछ लोग यह कहते हुए सुने गये हैं कि जब भारत सरकार ने एक गाइड लाइन जारी कर दी है और सबकुछ उसी की प्रतिपूर्ति से होना है तब फिर इस राजनैतिक दबाव का आशय क्या है ?

राजनैतिक दबाव तब काम आता है जब सरकार आपकी बात सुन न रही हो और लगातार आपकी उपेक्षा हो रही हो, परन्तु वर्तमान में तो स्थिति बिल्कुल भिन्न है केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पक्ष में काम कर रही हैं केन्द्रीय सरकार का जो रूख है वह बहुत सकारात्मक है, अब जो औपचारिकतायें हैं वह तो अब पूरी करनी ही होंगी किसी भी चीज़ को या किसी भी कार्य के पूर्ण होने में जो आवश्यक आवश्यकतायें होती हैं उसकी प्रपूर्ति करनी ही पड़ती है, 13 जून, 2017 को भारत सरकार ने जो नवीन पत्र निर्गत किया है वह इसी का एक अंग है जब सबकुछ ठीक ठाक चल रहा है तब हमारे साथी पुरानी पुरानी चीजों को दिखाकर क्या बताना चाहते हैं ?हम फेसबुक पर प्रायः यह देखते हैं कि वर्ष 2014 का एक पत्र फ्लैश किया जाता है इस समय इसकी क्या आवश्यकता है ? यह तो वही लोग जान सकते हैं जो इस तरह के कार्यों में तल्लीन हैं यहां पर इसका लिखने का आशय यह है कि जिन दस्तावेज़ों की आज आवश्यकता नहीं है वह बार बार क्यों दिखाये जाते हैं जब इस तरह के कागज़ात सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में आते हैं तो जो उसको प्रथम बार देखता है उसके मन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति कोई अच्छा भाव नहीं पैदा होता है और इसका प्रचार एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे के पास होता है, दिखाना ही है तो वर्तमान स्थिति दिखाइये जिससे कि जनमानस में अच्छा संदेश जाये जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सीधे जुड़े हैं और ऐसे लोग जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रबल समर्थक हैं जिनकी प्रबल इच्छा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सम्मान जनक स्थान मिले और इसी सम्मान जनक स्थान के लिए वह बरसों से प्रतीक्षारत हैं ऐसे लोग जब कोई सकारात्मक बात सुनते हैं तो उनके मन में एक नई ऊर्जा का संचार होता है सकारात्मक विचार हमें लगातार आगे का मार्ग दिखाते हैं जो गुज़र चुका है उससे हम प्रेरणा लेकर भूल में सुधार तो कर सकते हैं परन्तु यदि बार बार गुज़री ही बातों पर स्थिर रहेंगे तो प्रगति की बात कब सोचेंगे इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में उन्हीं बातों को प्रचारित करना चाहिये जो बातें उत्साह को बढ़ाती हों साथ साथ वास्तविक हों, सत्य से परे यदि हमने कुछ कहा तो जब कभी भी सत्य उजागर होगा तो आपके लिए जवाबदेही बहुत मुश्किल हो जायेगी।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विषय किसी एक शहर या राज्य का नहीं है यह एक राष्ट्रीय विषय है और देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों की भावनायें इससे जुड़ी हुई हैं यह एक कटु सत्य है कि हमारा अधिकाशं इलेक्ट्रो होम्योपैथ अभी भी सही सूचनाओं से वंचित रहता है, अधिकाशं सूचनायें उसके पास एक दूसरे के माध्यम से पहुंचती हैं और इन्हीं माध्यमों के कारण जो सूचनायें हैं उनका स्वरूप ही बदल जाता है इसका एक मात्र कारण यह है कि सूचनाओं का विस्तार जो लोग भी करते हैं वह उसमें कुछ न कुछ मिलावट कर देते हैं मिलावट होते होते यह सूचनायें भी मिलावटी हो जाती हैं, हमारे कुछ साथी जो अपने आप को जागरूक की श्रेणी में रखते हैं वह सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए जन सूचना अधिकार अधिनियम का प्रयोग करते हैं और इसके प्रयोग में यदि जरा सी असावधानी हुई तो उत्तर भी वही आयेगा जो आपने पूछा है उदाहरण के लिए एक जागरूक कार्यकर्ता ने प्रश्न किया कि क्या इलेक्ट्रोहोम्योपैथी से प्रैक्टिस की जा सकती है ? विभाग में बैठे हुए अधिकारी इस सीधे सादे प्रश्न का उत्तर सीधे न देकर घुमा फिरा कर देते हैं जिससे कि प्रश्नकर्ता भ्रमित हो जाता है इस प्रश्न का उत्तर अधिकारी देता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी गैर मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धति है गैर मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धति से प्रैक्टिस करना अवैध है।

अब आप देखिये कि एक सीधे से सवाल को विभाग कितना टेढ़ा मेढ़ा उत्तर देता है, मान्यता और प्रैक्टिस दोनों अलग अलग बातें हैं यह सर्वविदित है कि अभी तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता नहीं मिली है मान्यता का विषय सरकार के पास लाम्बित है और प्रैक्टिस के लिए बाकायदा प्रदेश सरकार द्वारा शासनादेश है और जब इसी तरह के समाचार सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित किये जाते हैं तो जो लोग भी इस समाचार को पढ़ते हैं उनके मन में निराशा का भाव पैदा होता है इसलिए बिना वास्तविकता को समझे इस तरह के समाचार प्रचारित नहीं करने चाहिये।

अब समय भ्रम में पड़ने का नहीं है बल्कि समय है भारत सरकार द्वारा मांगी गयी जानकारियों की पूर्ति करने का और नई व्यवस्था निर्मित होने दें, क्योंकि ज्यों ज्यों समय बीतता जाता है लोगों की आंकक्षायें बढ़तीजाती हैं यह एक मानव की प्रवृत्ति होती है जब कोई चीज़ मिलने की उम्मीद होती है तो वह चाहता है कि जो मिलना है वह जल्दी से जल्दी मिल जाये, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति आज यही है हमारे साथियों ने पाने की इतनी ज़्यादा उम्मीद जगा दी है कि लोग प्रतीक्षा ही नहीं कर पा रहे हैं हर दिन एक दूसरे से प्रश्न होता है कि क्या हुआ सरकार ने क्या किया ?जबकि वास्तविकता यह है कि 31 दिसम्बर तक हम सबको इंतेज़ार करना ही पड़ेगा उसके बाद ही सरकार कोई निर्णय करेगी इसलिए तबतक जो कुछ भी करें सार्थक करें।

बेस्ट चिकित्सक अवार्ड से सम्मानित हुये डा0 जुनैद

नजीबाबाद (गज़ट प्र0)। इलैक्ट्रो होम्योपैथिक रिसर्च एंव डेवलपमेन्ट आर्गेनाईजेशन ऑफ इण्डिया द्वारा सहारनपुर में आयोजित हुए डाक्टर्स डे कार्यक्रम में इलैक्ट्रो होम्योपैथिक रिसर्च एंव डेवलपमेन्ट आर्गेनाई- जेशन ऑफ इण्डिया के उत्तर प्रदेश प्रभारी डा0 एम0 जुनैद अंसारी को बेस्ट प्रैक्टिशनर अवार्ड से सम्मानित किया गया। अंबाला रोड स्थित एक होटल में आयोजित कायक्रम में मुख्य अतिथि आयुश मंत्री डा0 धर्म सिंह सैनी, राष्ट्रीय अध्यक्ष के0पी0एस0 चौहान, सचिव डा0 एस शर्मा ने इलैक्ट्रो होम्योपैथिक रिसर्च एंव डेवलपमेंट आर्गेनाईजेशन ऑफ इण्डिया के उत्तर प्रदेश प्रभारी डा0 एम0 जुनैद अंसारी को चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए बेस्ट प्रैक्टिशनर अवार्ड से सम्मानित किया गया।